ISSN :- 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया

त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A REFEREED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

४० वर्षे तृतीयोऽङ्कः (जुलाईमासाङ्कः) २०१५ ई०

सम्पादकः

प्रो० रमेशकुमारपाण्डेयः

कुलपतिः

सहसम्पादकः

डॉ० ज्ञानधरपाठकः

प्रकाशन-स्थलम्

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्

(मानितविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-११००१६

Scanned by CamScanner

विषयानुक्रमणिका

संस्कृतविभागः

1.	भामहदण्डि-सम्मत-भाविकत्वप्रबन्धगुणस्य वक्रोक्तिजीविते विकासक्रमः	**प्रो. अमिता शर्मा**	1
2.	योगवेदान्तयोः समाधिनिरूपणम्	**डॉ. दीपककुमारद्विवेदी**	11
3.	अपवर्गस्वरूपम्	**डॉ. सियंका द्विवेदी**	17
4.	सृष्टिविमर्शः	**श्रीमतिः सुरभिशर्मा**	23
5.	निपातार्थविचारः	**डॉ. रामनारायणद्विवेदी**	28
6.	विशिष्टाद्वैतवेदान्तसिद्धान्ते प्रमेयमीमांसा	**श्रीरामनरेशत्रिपाठी**	34

हिन्दी विभाग

7.	परामनोविज्ञान तथा भारतीय दर्शन में अतीन्द्रिय ज्ञान	**प्रो. बच्छराज दूगड़**	46
8.	सौन्दर्य दृष्टि एवं भारतीय रङ्गमञ्च : एक चिन्तन	**डॉ. पी. के. पण्डा**	57
9.	न्याय में तर्क-मीमांसा (प्रथम भाग)	**डॉ. अरुण मिश्र**	63
10.	उत्तरसीताचरितम् में अभिव्यक्त स्त्री-सशक्तीकरण	**डॉ. कमलेश रानी**	92

English Section

11.	Gavaya, Gauramriga and Gayal in Ancient Indian Literrature and Culture	**Shri K.G. Sheshadri**	100

Scanned by CamScanner

परामनोविज्ञान तथा भारतीय दर्शन में अतीन्द्रिय ज्ञान

प्रो. बच्छराज दूगड़

सभी प्रकार की परासामान्य घटनाओं का पूर्वाग्रह-मुक्त दृष्टि से वैज्ञानिक विधियों द्वारा अध्ययन करने वाला विज्ञान परामनोविज्ञान कहलाता है। परामनोविज्ञान पर सन् 1882 के लगभग विलियम बैरेट के प्रयासों से एक व्यवस्थित, सुसंबद्ध एवं गंभीर शोध का विधिवत् श्रीगणेश हुआ। इसी वर्ष सिजविक की अध्यक्षता में सोसायटी फोर साइकिकल रिसर्च संस्थान का गठन हुआ। मायर्स, गर्नी, सर ऑलिवर लोज, सर विलियम बैरेट, सर विलियम क्रुक्स, राइन आदि के प्रयासों से 30 दिसम्बर, 1969 को परामनोविज्ञान को अमेरिका के सर्वोच्च वैज्ञानिक प्रतिष्ठान "अमरीकन एसोसिएशन फोर द एडवांसमेंट ऑफ साइन्स" के द्वारा वैज्ञानिक मान्यता मिली।

परासामान्य घटनाओं का भारतीय योग में भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। पर भारतीय परम्परा अध्यात्मोन्मुखी है और परासामान्य प्रघटन आत्मोपलब्धि की साधना मार्ग में आने वाले प्रासंगिक फल हैं। आत्मप्राप्ति लक्ष्य होने के कारण भारतीय योग को तात्त्विक रूप दिया गया है तथा ज्ञान प्राप्ति के लिए तात्त्विक साधना एवं मूल्यों का जीवन अनिवार्य माना गया। इस दृष्टि से अतीन्द्रिय ज्ञान भारतीय योग का साधना पक्ष है जबकि परामनोविज्ञान उस साधना का प्रायोगिक पक्ष। यही कारण है कि परामनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र में आने वाली सभी परासामान्य प्रघटन भारतीय साहित्य में विपुलरूप से उपलब्ध हैं।

मन और मस्तिष्क का संबंध

मन और मस्तिष्क के आपसी क्रियाकलापों पर आज बहुत शोध हो रहा है। मस्तिष्क में विद्युतधारा का पता 1928 में भौतिकविद् हैंसबर्गर ने लगाया था। उन्होंने देखा- मस्तिष्क में विद्युतधारा की तरंगे लयबद्ध गति में ऊर्मियों की तरह उठती रहती हैं। प्रश्न हुआ- इन विद्युत् धाराओं का परामनोवैज्ञानिक क्षमताओं पर क्या प्रभाव पड़ता है? अन्वेषण से यह तथ्य सामने आया कि अल्फा तरंगे अतीन्द्रिय व्यवहार का कारण होती हैं। अल्फा तरंगे चिंतन-मनन के दौरान अधिक गतिशील होती हैं। पर जब चिंतन-मनन शांत होता है ये भी शांत होती चली जाती हैं और उस काल में मन की अव्यक्त शक्तियों के उभरने की संभावना होती है।

वैज्ञानिकों ने ऐसे ब्रह्मांडीय अति परमाण्विक सूक्ष्म कण की खोज की है, जिसमें घनत्व, भार, विस्फुटन, चुंबकीय क्षेत्र आदि भौतिक लक्षण नहीं हैं। वैज्ञानिकों ने इन्हें न्यूत्रिनी कहा है। ये लाखों की संख्या में हमारे शरीर के भीतर और बाहर रोशनी की गति से सारी पृथ्वी पर घूम रहे हैं। अभौतिक होने के कारण भौतिक कण उन्हें रोक नहीं पाते, कभी संयोग से टकराव हो जाता

Scanned by CamScanner

है। ऐसे ही टकराव में वैज्ञानिक उन्हें देख पाए हैं। इसी आधार पर प्रतिभाशाली गणितशास्त्री एड्रियां ड्रॉक्स ने एक नये सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जिसमें न्यूत्रिनी के समान साइत्रोन कण की कल्पना की हुई है। ये ही मस्तिष्क के न्यूरोन कणों के साथ जुड़कर पराचेतना का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

भौतिकीशास्त्री मार्टिक रदरफोर्ड ने कहा- मनुष्य की नाडी व्यवस्था पर न्यूत्रिनी कणों का महासागर प्रभाव डालता है। प्रसिद्ध अंतरिक्ष विज्ञानी एवसेल फरर्सोफ ने कहा- अतीन्द्रिय संवेदन न्यूत्रिनों की भांति व्यापक मानसिक चेतना से संपन्न ''माइन्ड्रोन'' नामक कणों द्वारा होता है। इन कणों के द्वारा हमारा उपचेतन मन ब्रह्मांडीय चेतना के साथ जुड़ जाता है और सर्वज्ञ बन जाता है।

मन का पदार्थों पर प्रभाव

मन के पदार्थों पर प्रभाव के बहुत से उदाहरण हमें पाश्चात्य और भारतीय चिंतन में देखने को मिलते हैं, इन्हें साइकोकाइनेसिस कहा जाता है। क्वांटम शास्त्र के परिपूरकता सिद्धान्त ने मन और पदार्थ के पृथक् अस्तित्व और उनके संबंध को सिद्ध कर दिया है। ब्रह्मांड के मूल तत्त्व, जैसे इलेक्ट्रोन और प्रोटोन दो-मुखी इकाइयां हैं। कुछ दशाओं में वे पदार्थ के ठोस कणों का रूप ग्रहण कर लेते हैं तथा दूसरी परिस्थितियों में वे अपदार्थ- माध्यम के भीतर तरंगों की तरह व्यवहार करते हैं। ये दोनों दशाएं एक-दूसरे के प्रतिकूल हैं तथापि उनका अस्तित्व है। अत: विज्ञानी पदार्थ और अपदार्थ की परिपूरकता के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं। संभवत हाइसनबर्ग पहला विज्ञानी है, जिसने यह बात स्वीकार की है कि इन मूल कणों के पदार्थ और अपदार्थ स्वरूप मन के प्रतिनिधि हैं। जब हम अतंरिक्ष में वस्तुगत स्तर पर देखते हैं, परमाणु वस्तु नहीं रह जाते और समय का अस्तित्व भी लुप्त हो जाता है।

इसी प्रकार यह कहा जा सकता है कि मानसिक अनुभूतियों, विचारों, बिंबों, स्मृतियों आदि का अस्तित्व स्थान, काल और पदार्थ के वस्तुत ढांचे से बाहर है, फिर भी वे भौतिक मस्तिष्क के साथ उसी प्रकार जुड़े हुए हैं, जिस प्रकार फोटोन का पदार्थहीन स्पंदनमूलक स्वरूप अपने दानेदार पदार्थ रूप के साथ।

नोबेल पुरस्कार विजेता यूजोन विगनर ने कहा- यह कहना सही नहीं है कि पदार्थ की हलचल चेतना को तो प्रभावित करती है, किन्तु स्वयं उससे प्रभावित नहीं होती। सही स्थिति यह है कि समस्त सक्रिय पदार्थ जिस चेतना को प्रभावित करता है, उससे वह प्रभावित भी होता है।[1]

सोवियत संघ की नीना कुलगीना ने प्रसिद्ध रूसी वैज्ञानिक डॉ. गेनाडी सर्जियेव और डॉ. सर्जी सैरिशेव की उपस्थिति में लेनिनग्राद विश्वविद्यालय के चिकित्सा केन्द्र की प्रयोगशाला में 10

---

1. नवभारत टाइम्स, वार्षिकांक 1976, पृ. 24-25

Scanned by CamScanner

मार्च, 1970 को ऑपरेशन टेबल पर मेंढ़क को चीरकर निकाले गये उसके हृदय की गति को अपने आदेशों द्वारा तीव्र, मंद एवं एकदम बंद कर दिया। नीना स्थिर वस्तुओं को चलायमान कर सकती है।

अमेरीका व रूस के वैज्ञानिक इन शक्तियों का उपयोग अंतरिक्ष क्षेत्र में कर रहे हैं। उनके सामने यह प्रश्न है कि क्या अतीन्द्रिय शक्ति अंतरिक्ष यान से संपर्क करने व उसे नियन्त्रित करने में सफल हो सकती है? अमेरिका के अतीन्द्रिय हथियारों के संबंध में प्रसिद्ध लेखक ''रोनाल्ड मैकरई'' ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''माइंड वार्स'' में लिखा है कि अमेरिका ने अपनी ''रौलगेम'' परियोजना में प्रक्षेपास्त्रों की जांच मन की शक्ति से करके देखी है।

मबार्टिन इवान ने ''साईविस्वार फेयर'' नामक पुस्तक में 1960 से ही रूस में अतीन्द्रिय हथियारों पर शोधकार्य की चर्चा की है। डॉ. स्नेल बर्ग नामक वैज्ञानिक ने रूसियों द्वारा मन:शक्ति से चलने वाले हथियारों के निर्माण की बात भी कही है।

सोवियत संघ के वैज्ञानिकों द्वारा अध्ययन की हुई यह घटना भी इस दिशा में पर्याप्त प्रकाश डालती है- ''मादाम मिखाइलोबा एक पार्टी में हुई। वहां एक टेबल पर डबलरोटी उनसे कुछ दूर रखी हुई थी, उन्होंने उसकी ओर एकटक देखना शुरू कर दिया। कुछ ही देर में डबलरोटी उनकी ओर सरकने लगी। जैसे ही वह टेबल के छोर पर आई, मादाम मिखाइलोवा ने अपना मुंह खोला और अगले ही क्षण डबलरोटी उनके खुले मुंह में थी।''[1]

डॉ. लुइसा राइन एवं डॉ. जे. बी. राइन ने ड्यूक विश्वविद्यालय में अनेक वर्षों तक मन:प्रभाव संबंधी सैकड़ों परीक्षण कर कई तथ्य एकत्रित किये हैं।[2] 1972 में तेल अबीब के गेलर ने अमेरिका के राष्ट्रीय दूरदर्शन पर चुने हुए वैज्ञानिकों के समक्ष मन की क्षमताओं का प्रदर्शन किया, जिसमें धातु की चीजों को मन:शक्ति से मोड़ना आदि शामिल था। इनके अतिरिक्त अमेरिकन निवासी टेड सिरियोस ने डॉ. इयान स्टीवेंसन तथा डॉ. जे. जी. प्रेट के सामने विचार-चित्रण के भी प्रदर्शन किये।[3]

घटनाओं की विस्तृत शृंखलाओं को छोड़कर यदि हम भारतीय संदर्भों को देखें तो इस तरह की शक्तियों के उल्लेख बौद्ध, जैन, योग आदि दर्शनों में बहुतायत से उपलब्ध हैं। इनको किसी तरह से ज्ञान की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, अपितु ये एक विशेष प्रकार की शक्तियाँ ही होती हैं। वेदों में स्पर्श चिकित्सा एवं प्राचीन जैन ग्रंथों में आचार्य सिद्धसेन द्वारा मन की शक्तियों से पूरी सेना का निर्माण,[4] आचार्य पादलिप्त द्वारा आकाश गमन तथा स्वमूत्र से स्वर्ण निर्माण आदि विशिष्ट

2. साइकिक डिस्कवरीज बिहाइन्ड द आइरन कर्टेन, न्यूयार्क 1970
3. माइण्ड ओवर मैटर, मैकमिलन, न्यूयार्क, 1970
4. द जर्नल ऑव द अमेरिकन सोसायटी फॉर साइकिकल रिसर्च, 1981 में प्रकाशित इजनबड, प्रैंट व स्टीवेंसन का निबन्ध- ''डिस्टार्शन इन द फोटोग्राफ्स ऑव टेड सीरियोस''
5. योनि प्राभृत

Scanned by CamScanner

घटनाओं का उल्लेख मिलता है। त्राटक द्वारा मन की शक्ति को एकाग्र कर किसी वस्तु को गतिशील या स्थिर करना जैन एवं योगग्रन्थों में वर्णित है। बौद्धग्रन्थों में भी पदार्थ पर मन के प्रभाव की चर्चा ऋद्धिविध नामक शक्ति के अन्तर्गत है।[1] इसे अतीन्द्रिय ज्ञान न मानकर शक्ति के रूप में सम्मिलित किया गया है।[2] योगदर्शन में भी मन पर संयम करने से अनेक विभूतियों की प्राप्ति के उल्लेख हैं तथा जैन दर्शन में भी लब्धियों के उल्लेख हैं, जिनमें तेजोलब्धि मनःशक्ति का स्पष्ट प्रमाण है।[3]

कई योगियों में इस प्रकार की शक्तियों के स्वामी होने के प्रमाण मिलते हैं। महामहोपाध्याय पं. गोपीनाथ कविराज के गुरु परमहंस स्वामी विशुद्धानंद भी इसी तरह की अतीन्द्रिय शक्तियों के स्वामी थे। पं. गोपीनाथ कविराज ने अनेक शक्तियों का स्वदृष्ट वर्णन किया है, जिनमें एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ में बदलना, नवीन सृजन आदि सम्मिलित हैं।[4] वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर यह संभव भी है क्योंकि जगत् के प्रत्येक पदार्थ में अन्य समस्त पदार्थों के उपादान विद्यमान रहते हैं। स्वामी जी के अनुसार एक पदार्थ को इच्छित पदार्थ में बदलने के लिए इच्छित पदार्थ के सजातीय उपादान को बाह्यजगत् से आकर्षित कर एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ में परिणत किया जा सकता है।

विभिन्न अतीन्द्रिय ज्ञान

अतीन्द्रिय-ज्ञान पर आधारित अनुभवों को प्रमुखतः चार प्रकारों में विभाजित किया जाता है- 1. विचार संप्रेषण, 2. दूर-दृष्टि 3. पूर्वाभास और 4. भूताभास।

विचार संप्रेषण (Telepathy)[5]-किसी भी प्रकार के भावों का एक मन से दूसरे मन तक इन्द्रियों के ज्ञात माध्यमों से निरपेक्ष संधारण टेलीपेथी है।[6] अनेक परामनोविज्ञानवेत्ता टेलीपेथी को सामान्य जीवन का साधारण अनुभव बताते हैं। उनके अनुसार अगर कभी हमें कुछ अनुभव होते हैं तो हम उन्हें मात्र संयोग मानकर नजर-अंदाज कर देते हैं। डॉ. स्टीवेन्सन ने विचार संक्रमण और अतीन्द्रिय दृष्टि संबंधी विपुल घटनाओं में से कुछेक विचार संक्रमण की घटनाओं का तथ्यात्मक

---

1. विशुद्धि मार्ग, भाग-2, ऋद्धिविधनिर्देश, परिच्छेद-12
2. बुद्धिस्ट फिलासफी, पृ. 21
3. अतीन्द्रियज्ञान, अध्याय-4
8. देखें अध्याय-4
4. महा. पं. गोपीनाथ कविराज : एक मनीषी की लोकयात्रा
5. टेलीपेथी शब्द परामनोविज्ञान के जन्मदाता फ्रेडरिक विलियम एच. मायर्स ने गढ़ा था। इससे पूर्व थोट ट्रांसफरेन्स शब्द प्रचलित था। हिंदी में इसके लिए कहीं-कहीं दूरसंवेद या परचित्तबोध शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।
6. The telepathy is the communication of impression of any kind from one mind to another independently of recognised channel of sense. - F.W.H. Myres : Human Personality and its Survival after Bodily Death

Scanned by CamScanner

पुनर्मूल्यांकन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। वे विचार संक्रमण की दृष्टि से जिस घटना में मानसिक विचार या भाव की छाप अधिक स्पष्ट परिलक्षित हो, उस पर विशेष ध्यान देने का आग्रह करते हैं।[1]

विश्वविख्यात लेखक मार्क ट्वेन (सेम्युअल क्लीमेंस) के बारे में **हरॉल्ड शर्मन** ने अपनी पुस्तक 'थॉट्स थ्रू स्पेस' में एक घटना का विवरण दिया है। ट्वेन को 1885 में प्रकाशित अपने लेख की प्रति की 1906 में आवश्यकता पड़ी। जहां से यह लेख प्रकाशित हुआ था, वहाँ से भी वह प्रति उपलब्ध नहीं हो सकी। ट्वेन ने अपने सभी कागज-पत्र उलट डाले पर सफलता नहीं मिली। दूसरे ही दिन वे न्यूयार्क के फिफ्थ एवेन्यू से गुजर रहे थे। एक आदमी दौड़ता हुआ आया और कागजों का एक पुलिंदा ट्वेन को थमाते हुए बोला- ''मैं इन्हें 20 वर्षों से अपने पास रखे हुए था, पता नहीं, क्यों आज सुबह ही मुझे ऐसा लगा कि मैं इन्हें आपको भेज दूं।.....'' पुलिंदे को खोलने पर उसमें उन्हें वही प्रति मिल ई, जिसे वे व्यग्रता से खोज रहे थे।

ट्वेन ने अपने एक पत्र में ब्रिटिश सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च को लिखा- ''मैं अपने संदर्भ में यह कह सकता हूं कि यह अच्छी तरह दर्शा दिया गया है- लोग एक-दूसरे से बहुत दूरी पर भी स्पष्ट मन:संचार कर सकते हैं।'' निस्संदेह ऐसा करवाने के लिए उन क्षणों में दोनों मस्तिष्क एक विशिष्ट अनुकूल अवस्था में होने चाहिए। तब हम सामने वाले की भाषा की जानकारी के अभाव में भी मात्र विचारों से अत्यंत अल्प समय में संचार कर सकेंगं।

स्टीवेन्सन ने अपनी पुस्तक टेलीपेथिक इम्प्रेसन्स ए रिव्यू एंड रिपोर्ट में सुविख्यात मनश्चिकित्सक डॉ. सी. जी. जुंग की घटना का उल्लेख किया है, जिसमें जुंग को अपने रोगी के मर जाने का अनुभव हुआ था।[2]

इस प्रकार की अनेक घटनाओं के विश्लेषण के पश्चात् परामनोवैज्ञानिकों की यह धारणा बनी है- कोई विशेष शक्ति है, जो इन्द्रिय-निरपेक्ष रूप से दूसरे के मन तक संचरण करने में सक्षम है। प्रश्न उठता है- क्या ये क्षमताएं मन के किसी एक केन्द्र से उद्भूत एक ही शक्ति के भिन्न-भिन्न रूप तो नहीं? स्पिनोजा के अनुसार ये क्षमताएं असाधारण अवश्य हैं पर अलौकिक नहीं। वे अतीन्द्रिय बोध का कारण कल्पना शक्ति को मानते हैं। स्पिनोजा की अतीन्द्रिय बोध संबंधी धारणा उनके इस मत में छिपी है कि चेतना और विस्तार एक ही द्रव्य के दो पक्ष हैं। जो कुछ हो रहा है, अनिवार्य रूप से हो रहा है तथा संभावना और वास्तविकता में कोई भेद नहीं है।

जर्मन दार्शनिक कांट अशरीरी सत्ताओं को मानते तो थे पर उन्हें प्रमाणित करने की संभावनाओं से वे स्वयं ही इन्कार करते थे। वे ऐसे तत्त्व के अभाव में नैतिक चेतना का विकास संभव नहीं मानते। पर बुद्धि और तर्क के आधार पर उसकी सिद्धि उन्हें अभीष्ट नहीं। डॉ. सी.

1. टेलीपेथिक इम्प्रेसन्स- ए रिव्यू एण्ड रिपोर्ट।
2. वही, पृ. 10.11

Scanned by CamScanner

डी. ब्रोड लिखते हैं- कांट दो अशरीरी सत्ताओं में सीधा संबंध स्वीकार करते थे, जो देशकाल की सीमाओं से सर्वथा अप्रभावित रहते हैं। वे यह भी व्यक्तिगत रूप से मानते थे कि इस अशरीरी सत्ता में भौतिक पदार्थों की आंतरिक अवस्थाओं को प्रभावित करने की शक्ति होती है।[1]

बर्गसां के अनुसार शरीर के साथ मन आंशिक रूप से सम्बद्ध है। उसका दूसरा मन अनवरत दूसरे मनों को प्रभावित करता रहता है। मनों के बीच अनवरत चलने वाले ये संपर्क ही विचार संक्रमण का कारण है। इस संदर्भ में यह प्रश्न सहज है कि यदि मनों के बीच अन्तःसंचरण निरंतर चलते रहते हैं तो हम अपना दैनिक जीवन कैसे चलाते हैं? बर्गसां कहते हैं- जीवन के उत्तरोत्तर विकास क्रम के साथ एक निरोधात्मक रचनातंत्र विकसित होता चला या है। वह रचनातंत्र जब प्रसुप्तावस्था में रहता है तब अवचेतन के विचार संक्रमित होकर चेतना में आ जाते हैं और विचार-संक्रमण के अनुभव के रूप में प्रकट होते हैं। अतः बर्गसां के मन में टेलीपेथी सामान्य स्मृति और इन्द्रिय-प्रत्यक्ष है, कोई अतिसामान्य बोध नहीं।[2]

राइन ने अपने प्रयोगों से इन तथ्यों को उद्घाटित किया-

1. भौतिक माध्यमों और संचार व्यवस्था के अभाव में भी एक मन दूसरे मन को प्रभावित कर सकता है। 2. बिना किसी ज्ञान-संवेदी यंत्र की सहायता के मन पदार्थ से सक्रिय ज्ञानात्मक संबंध स्थापित कर सकता है। 3. इस प्रक्रिया में दिक्काल की ओर से कोई बाधा उपस्थित नहीं होती।

टायरिल ने एक बड़ी महत्त्वपूर्ण बात का उल्लेख करते हुए कहा- अधिकतर अन्वेषक अपने प्रयोगों में भौतिक विज्ञानों की तरह प्रायोगिक दशाओं पर बल देते समय इस तथ्य की पूर्णतः उपेक्षा कर देते हैं कि अतीन्द्रिय प्रत्यक्षण में मात्र भौतिक दशाओं का ही महत्त्व नहीं होता, वरन् मनोवैज्ञानिक दशाएं भी बड़ी महत्त्वपूर्ण हुआ करती हैं। मात्र इन्द्रियों से ही मानव व्यक्तित्व की समग्रता को ग्रहण करना संभव नहीं, उसका बहुत बड़ा अंश इन्द्रियातीत रहता है। उनकी दृष्टि से परासामान्य और सामान्य जैसा भेद भी अवास्तविक है। हर व्यक्ति में ऐसी क्षमता होती है। प्रयोगकर्ता का कार्य ग्राही के मन के अवरोधों को दूर कर इस क्षमता की अभिव्यक्ति को प्रेरित करना होता है और इसके लिए व्यक्तिगत प्रभाव की भी अपेक्षा रहती है।

टायरिल के अनुसार अधिचेतना की क्रिया काल-निरपेक्ष होती है तथा विचार संक्रमण की प्रक्रिया में किसी प्रकार के भौतिक कार्य-कारण संबंध को खोजना उचित नहीं है। टेलीपेथी पर अपने विचारों का समाहार करते हुए टायरिल लिखते हैं-"In telepathy, person whose body is in one place can have knowledge of what is in the mind of a person whose body is at

1. A change in the inner state of a spiritual affects the inner state of material elements of body which it animates directly by a kind of telepathic report.
2. Bergson put forward in connection with normal memory and sense perception. C.D., Broad : Religion, Philosophy and Psychical Research, Kegan Paul, London, p. 22-23

Scanned by CamScanner

another place without any physical action taking place in the intervening space. Action in the physical world can, moreover, be taken as a result of knowledge so acquired, thus something can happen in the ordinary world as the result of telepathy which would not happen otherwise."

प्राइस की दृष्टि में विचार संक्रमण अभिज्ञान न होकर एक विशेष प्रकार का अनुप्रेषण है।[1] हमारे मन का अवचेतन दूसरे मन के अवचेतन अंश से कार्य-कारण रूप से सम्बन्धित है। अत: प्राइस विचार संक्रमण की उत्पत्ति अभिग्राहक और अभिप्रेषक के बीच अनुभव की एकरूपता पर आधारित मानते हैं। बर्गसां की तरह प्राइस भी विचार-संक्रमण की अनवरतता में निरोधात्मक रचनातंत्र को अवरोधक मानते हैं। जब यह अवरोध प्रशांत अवस्था में क्षीण हो जाता है, मन विचार-संक्रमण की क्रिया को ग्रहण करने में सक्षम हो जाता है।

वाटली कैरिंटन के अनुसार एक समान वातावरण से मनों में एक जैसे बोध उत्पन्न होते हैं। विचार-संक्रमण के समय अभिप्रेषक के मन में कोई विषय होता है तो स्वभावत: ही उस विषय से सम्बद्ध अनेक प्रकार के विचार भी रहते हैं और प्रयोगकाल में सम्बद्ध भाव भी जुड़े रहते हैं। चूंकि अभिप्रेषक और अभिग्राहक- दोनों के मन में अवचेतन या अचेतन रूप से कुछ सामान्य रहता है अत: अभिग्राहक के मन में वे विचार उभर आते हैं।

टेलीपेथी विषयक भारतीय चिंतन परामनोविज्ञान की मान्यताओं से भिन्न है। पातंजल योग के विभूतिपाद में परचित्त ज्ञान का स्पष्ट उल्लेख है।[2] यहां स्वचित्त ज्ञान का भी उल्लेख किया या है।[3] परचित ज्ञान के लिए दूसरे व्यक्ति की चित्तवृत्ति में संयम करने का निर्देश है। संयम का अर्थ भी महत्त्वपूर्ण है- त्रयमेकत्रसंयम,[4] अर्थात् धारणा, ध्यान और समाधि तीनों एक ही विषय को सिद्ध करने के लिए मिलें तो "संयम" कहा जाएगा। योगशास्त्र का परचित्त बोध परामनोविज्ञान के समान है या नहीं, इस प्रश्न पर विचार करें तो प्राइस का मत उभर कर सामने आता है, जहां विचार संक्रमण को अभिज्ञान न मानकर एक विशेष प्रकार का अनुप्रेषण मानते हैं।

बौद्ध दर्शन में चेतोपर्यज्ञान[5] (परचित्त बोध) को माना गया है जो एकाग्र (समाहित) मन के द्वारा ही संभव है। जैनदर्शन के मन:पर्यवज्ञान को टेलीपेथी के समकक्ष कुछ अन्तर में रखा जा सकता है और वह अंतर यह है कि जानने वाली आत्मा है न कि मन। जैनदर्शन के अनुसार मन:पर्यवज्ञान इन्द्रिय और मन की सहायता के बिना साक्षात् आत्मा से होता है। चेतोपर्यज्ञान और मन:पर्यवज्ञान में दूसरे के विचारों को जाना जा सकता है पर विचार संप्रेषण नहीं किया जा सकता।

दूर-दृष्टि (Clairvoyance)- परामनोविज्ञान में दूर-दृष्टि को भौतिक पदार्थों या घटनाओं

---

1. Telepathy, says Price, is more like intution than like knowledge.

2-4. योगसूत्र, 3.19-20, 3.34, 3.4

5. David J. Kaluphana : Buddhist Philosophy, p. 22-23. Telepathy (Cetopariyanana), which enables one to comprehend the general state as well as the functioning of another's mind.

Scanned by CamScanner

की अतीन्द्रिय जानकारी के अर्थ में लिया गया है।[1]

डॉ. रायन किसी व्यक्ति की मानसिक अवस्था या विचारों से भिन्न किसी वस्तु अथवा वस्तुपरक घटनाओं के इन्द्रिय-निरपेक्ष बोध को दूर-दृष्टि कहते हैं।[2] रायन विचार संक्रमण और दूर-दृष्टि के अंतर को स्पष्ट करते हुए कहते हैं-"At any rate, it would be difficult to offer any specific fundamental difference between the two types of manifestation of extra-sensory-perception, except, of course, in the target perceived—the one subjective and other objective.[3]" ''मेन द अननॉन'' में कहा गया है- भविष्य दर्शन और टेलीपेथी वैज्ञानिक पर्यवेक्षण के मूलाधार हैं। जो इस शक्ति से युक्त हैं, वे अन्य व्यक्तियों के गुप्त विचारों को इन्द्रिय ज्ञान को प्रयुक्त किए बिना ही ग्रहण कर लेते हैं। वे दूरी और समय से परे की घटनाओं को भी ग्रहण करते हैं। यह अतीन्द्रिय ज्ञान कुछ व्यक्तियों में स्वभावत: होता है जबकि कुछ में प्रयत्न द्वारा प्रकट होता है। मेक्डूगल लिखते हैं- ''भविष्य दर्शन का प्राचीन सिद्धान्त भली भांति प्रस्थापित है।''

दूरदृष्टि के प्रयागों में सर्वप्रथम कार्डों के प्रयागे होते थे, जिसमें प्रेषक व ग्राही के बीच दूरी रखी जाती थी तथा प्रेषक एक-एक कार्ड को उलटा उठाकर उसे बिना देखे दूसरी जगह रख देता था तथा ग्राही उस कार्ड के प्रतीक चिह्नों को नोट कर लेता था। इस तरह के कार्डों के प्रयोग हजारों मीलों की दूरी से भी किये गये। कैरिंगटन ने इन प्रयोगों के बाद चित्रों की विधि अपनाई। चित्र को वह अपनी प्रयोगशाला में यादृच्छिक रूप से टांग दिया करता था, दूर बैठे अनेक व्यक्ति उस लक्षित वस्तु के चित्र बनाते थे। इन प्रयोगों की सफलताओं की संख्या मात्र संयोग से पा सकने की तुलना में कहीं अधिक थी। इनमें कई ऐसे व्यक्ति भी पाये गये जिन्होंने लक्षित वस्तु का चित्रण वस्तु के टांगे जाने से पूर्व किया और कई ऐसे भी थे जिन्होंने लक्षित वस्तु का चित्रण एक या दो दिन बाद किया लेकिन सर्वाधिक चित्रण उसी दिन हुआ जब वह चित्र टांगा गया था। अमेरिकन साइकिकल रिसर्च सोसायटी के निदेशक डॉ. ओसिस ने भी विभिन्न दूरियों से ऐसे प्रयोग किये और अपने अध्ययन से स्पष्ट किया कि अभिप्रेषकों की मनोदशा का ग्राही की सफलताओं पर स्पष्ट असर पड़ता है। संशयमुक्त और संकल्पशील अभिप्रेषक संशयशील और जल्दबाज व्यक्तियों से कहीं अधिक सफल होते हैं।

1960 के लगभग चैकोस्लोवाकिया के भौतिक एवं जीव रसायनशास्त्री एवं परामनोविज्ञानी डॉ. मिलान रिज्ल ने कुछ व्यक्तियों को सम्मोहित करके उनमें अतीन्द्रिय प्रत्यक्षण की क्षमता विकसित करने के प्रयोग किये। इन प्रयोगों से ऐसा स्पष्ट संकेत मिला कि सम्मोहन द्वारा कुछ व्यक्तियों में अतीन्द्रिय प्रत्यक्षण की क्षमता उत्पन्न की जा सकती है। आठवें दशक में अमेरिकन

---

1. Clairvoyance—Extra-sensory awareness of physical objects or events. Parapsychology-sources of information, p. 239
2. Dr. J.B. Rhine and J.G. Pratt. Parapsychology, p.13
3. वही, पृ. 9-10

Scanned by CamScanner

रिसर्च इन्स्टीट्यूट में डॉ. टार्ग एवं डॉ. हेराल्ड ने अत्याधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों से युगान्तकारी महत्त्वपूर्ण प्रयोग किये। उनका कथन है-''हमने अपने अवलोकन से इस कठिन सत्य को पाया है कि कोई भी व्यक्ति अतीन्द्रिय-दर्शन का अनुभव कर सकता है।[1]

योगशास्त्र में चित्त की स्थिरता के लिए विषयवती प्रवृत्ति का वर्णन हुआ है। अर्थात् संयम के बल से जब सूक्ष्म शब्दादि विषयों की चित्तवृत्ति सिद्ध होती है, तो चित्त की स्थिरता संपादित होती है।[2] संयम को प्राप्त हुआ साधक ही विषयवती प्रवृत्ति उत्पक कर सकता है और भूतजय, इन्द्रियजय तथा प्रातिभश्रवणादि सिद्धियों को प्रत्यक्ष कर सकता है। व्यास भाष्य करते हुए कहते हैं- नासिका के अग्रभाग में संयम करने से दिव्यगंध का, जिह्वाग्र में संयम करने से दिव्यरस का, तालु में संयम करने से दिव्यरूप का, जिह्वा मध्य में संयम करने से दिव्यस्पर्श का एवं जिह्वामूल में संयम करने से दिव्यशब्द का ज्ञान होता है .... इतना ही नहीं चंद्र, आदित्य, ग्रह, मणि, दीप और रश्मि आदि में संयम करने से जो दिव्यज्ञान उत्पन्न होगा, वह भी तद्-तद् देशविषयक विषयवती होगा।[3] इन सबका समाहार दिव्य दृष्टि में हो जाता है।

ज्योतिष्मती आलोक के विषय[4]

सूक्ष्म पदार्थ ज्ञान	व्यवहित पदार्थ ज्ञान	विप्रकृष्ट पदार्थ ज्ञान
देवयोनिभूतादियोनि	(अन्दर ढके हुए पदार्थ) सुवर्णनिधि आदि	सुदूर स्टीमर आदि
सूक्ष्मशरीरी	तिजोरी के अंतर्गत पदार्थ	ब्रह्मांड के भीतर
पितृयोनि	जमीन के भीतर के पदार्थ समुद्रान्तर्गत	देशान्तर्गत जल के अन्दर दूरगत
बेक्टेरिया (सूक्ष्मजीव)	जेब के भीतर के पदार्थ	पृथ्वी के अंदर दूरगत
सिद्धलोक इत्यादि	शरीर के भीतरपर्वतादि के भीतर	चंद्रादिग्रहों के अंतर्गत आदि

इसी प्रकार ज्योतिष्मती प्रवृत्ति में साधक को विभिन्न प्रकार का आलोक दिखाई देता है।[1] इस आलोक में संयम करने से साधक को सूक्ष्म व्यवधानरहित (व्यवहित) एवं सुदूर पड़ी हुई वस्तुओं का ज्ञान होता है।

योगशास्त्र की ये सिद्धियाँ परामनोविज्ञान की दूरदृष्टि की सीमा की ओर संकेत करती हैं। महाभारत में भी संजय को व्यास द्वारा धृतराष्ट्र को युद्ध का संपूर्ण एवं सूक्ष्म वृत्तांत सुनाने के लिए दूरदृष्टि दी हुई थी। इसमें संजय दूसरे के मन की एवं अत्यन्त सूक्ष्मातिसूक्ष्म बातों की जानकारी

---

1. माइन्ड रीच, पृ.6
2. विषयवती का प्रवृत्तिरुत्पन्ना मनस स्थिति-निबंधिनी, योशास्त्र, 1.35
3. नासिकाग्रे धारयतोऽस्य या दिव्यगंधसंवित्सा गंधप्रवृत्ति। जिह्वाग्रे रस संवित्। तालुनि रूपसंवित्। जिह्वामध्ये स्पर्शसंवित्। जिह्वामूले शब्द संवित्। एतेन चन्द्रादित्यग्रहमणिदीपरश्म्यादिषु प्रवृत्तिरुत्पन्ना विषयवत्येव वेदितव्या। योसूत्र 1.35,व्यासभाष्य
4. योगसूत्र, पृ. 278

Scanned by CamScanner

भी धृतराष्ट्र को देता रहा था और यह भी ज्ञातव्य है कि यह शक्ति संजय में युद्धकाल तक ही रही थी।

बौद्धदर्शन में भी दिव्यदृष्टि (दिव्यचक्षु) को स्वीकार किया गया है। **जैनदर्शन** का अवधिज्ञान भी इसी तरह का है। पर बौद्धदर्शन और जैन दर्शन के इन अतीन्द्रिय ज्ञानों को परामनोविज्ञान की दूरदृष्टि की शक्तियों के सीमित अर्थ में ही तुल्य कहा जा सकता है।

पूर्वाभास (Precognition) एवं भूताभास (Retrocognition)- किसी घटना के होने से पूर्व ज्ञानप्राप्ति के किसी मान्य साधन के उपयोग के बिना उस घटना का ज्ञान हो जाना पूर्वाभास है। ज्ञान प्राप्ति के मान्य साधनों के उपयोग के बिना अतीत में हुई घटना का ज्ञान भूताभास है।

कैरिंग्टन के प्रत्यक्षानुभूति के प्रयोगों के दौरान यह पाया गया- प्रयोग कक्ष में जिस दिन चित्र टांगे गये, परीक्षार्थियों द्वारा सर्वाधिक संख्या में चित्र उसी दिन अंकित किये गये पर कुछ परीक्षार्थियों ने प्रयोगकक्ष में चित्र टांगने के एक दिन पूर्व तथा कुछ परीक्षार्थियों ने एक दिन बाद में उस चित्र को अंकित किया था। तब कैरिंग्टन का ध्यान इस ओर गया- परीक्षार्थियों में अतीन्द्रिय ज्ञान नहीं वरन् पूर्वाभास एवं भूताभास अभिव्यक्त हुआ है।

पूर्वाभास के अनुभव विज्ञान के लिए विकट चुनौती प्रस्तुत कर रहे हैं, क्योंकि इनसे विज्ञान के आधारभूत कार्य-कारण सिद्धान्त पर प्रहार होता है। अभी जब किसी घटना का ''कारण'' ही उत्पन्न नहीं हुआ तो उसके भविष्य में ''परिणाम'' का ज्ञान कैसे संभव हो जाता है?

प्रख्यात अंतरिक्ष विज्ञानी फैड हॉयल का मानना है- काल आगे से पीछे की ओर भी जा सकता है। फेयनमां ने ब्रह्मांड में प्रतिपदार्थ के गोलाकार पिंडों की खोज की है, जिन्हें वह पॉजिट्रॉन कहता है। ये पॉजिट्रॉन काल में पीछे की ओर भी चलते हैं। फेयनमां ने उनकी गति का चित्र फिल्म पर उतारा है। अंतरिक्ष विज्ञानी इस संभावना पर तेजी से कार्य कर रहे हैं कि अंतरिक्ष में हमारे सौरमंडल को छोड़कर कुछ सौरमंडल ऐसे भी हैं, जो पूरी तरह प्रतिपदार्थ के बने हैं और उनमें काल-प्रवाह उल्टी दिशा में होता है। उन्होंने टेंकयोन नामक ब्रह्मांडीय कणों की कल्पना की है, जो प्रकाश से भी तेज गति से चलते हैं तथा अतीत की ओर जाते हैं। यदि ऐसा है तो भविष्य को अतीत में देखना संभव है।''[1]

पूर्वाभास व भूताभास के कई उदाहरण हमें उपलब्ध हैं। भूतपूर्व अमेरिकन राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा अपनी मृत्यु के आभास को कई वैज्ञानिकों ने पूर्वाभास का उदाहरण माना है।

11 अप्रैल 1865 की शाम को व्हाइट हाऊस में राष्ट्रपति लिंकन और उनकी पत्नी ने अपने मित्रों को दावत पर निमंत्रण दिया। क्योंकि कुछ ही समय पूर्व ''ली'' ने ग्रांट के समक्ष आत्मसमर्पण किया था और युद्ध समाप्त हो गया था। हर्षोल्लास के वातावरण में भी लिंकन उदास

1. वही, 1.36, व्यासभाष्य, तुलनीय श्वेताश्वेतरोपनिषद्, 2.11

Scanned by CamScanner

व खोये-खोये से थे। श्रीमती लिंकन के पूछने पर लिंकन ने बताया- उन्होंने स्वप्न में देखा कि एक रात अचानक किसी के रोने की आवाजें सुनकर वे जाग पड़े। वे उठकर व्हाइट हाऊस में इन आवाजों का कारण जानने हेतु चक्कर लगाने लगे। जब पूर्व की तरफ एक कक्ष में पहुंचे तो वहां एक दारुण दृश्य देखकर स्तब्ध रह गये- एक व्यक्ति के पास कुछ सिपाही खड़े हैं और वहां एकत्र बहुत से अन्य व्यक्ति रो रहे हैं।

"क्या व्हाइट हाऊस में किसी की मृत्यु हुई है?" उन्होंने एक सिपाही से प्रश्न किया।

"हाँ", राष्ट्रपति को उत्तर मिला- राष्ट्रपति महोदय की किसी ने हत्या कर दी है।

चार ही दिन के भीतर लिंकन व्हाइट हाऊस में मृत पाये गये, उनकी हत्या कर दी गई थी। इस तरह की बहुत सी पूर्वाभासी-घटनाएं हुई हैं। सभी अन्वेषक इस बात पर सहमत हैं कि अतीन्द्रिय बोध के सर्वाधिक अनुभव मृत्यु, दुर्घटना या किसी अन्य मानवीय संकट से संबंधित होते हैं। भूताभास के अन्तर्गत अनेकों पूर्वजन्म संबंधी घटनाएं सुनने को मिलती हैं।

योगशास्त्र में धर्म, लक्षण और अवस्था इन तीन परिणामों पर संयम करने से भूतकाल और भविष्यकाल के ज्ञान को स्वीकारा गया है।[2] योगशास्त्र के अनुसार पदार्थ का सर्वथा नाश नहीं होता, उनका तिरोभाव होता रहता है[3] इसलिए भूत, भविष्य के पदार्थों के अस्तित्व को अस्वीकारा नहीं जा सकता। बौद्ध दर्शन में भी भूताभास को स्वीकार किया गया है। अपनी स्वयं की पिछली घटनाओं को देखने की योग्यता भूताभास है। यह स्मृति (सत्ति) पर निर्भर है और भूतकाल के अस्तित्व की स्मृति समाधि से प्राप्त की जा सकती है। इसे बौद्धदर्शन में पूर्वनिवासानुस्मृतिज्ञान के नाम से जाना जाता है।[4] जैनदर्शन में भी पूर्वाभास की अनेक घटनाएं आगमों में मिलती हैं तथा पूर्वजन्म के ज्ञान को वहां जातिस्मृति ज्ञान कहा गया है, जो मतिज्ञानान्तर्गत ही है।

अन्वेषण कार्य की व्यापकता- विश्व भर में बहुत से संस्थान और व्यक्ति परामनोविज्ञान के अन्वेषण कार्य में लगे हैं। विश्व में परासामान्य क्षमताओं पर विधिवत् शोध कार्य पिछले सौ वर्षों से चल रहा है। पर भारतीय योग में ये अतीन्द्रिय ज्ञान शक्तियाँ दर्शन के प्रारंभिक काल से ही चर्चित हो रही हैं। योग सिद्धियों के लौकिक एवं लोकोत्तर- ये दो प्रकार किये गये हैं। परामनोविज्ञान का अध्ययन क्षेत्र अभी तक केवल सामान्य लोक जीवन में परिलक्षित होने वाली परासामान्य क्षमताओं तक ही सीमित है। वैज्ञानिक जांच के लिए ऐसी सीमा रेखा अनिवार्य भी है। अन्तर्राष्ट्रीय परामनोविज्ञान शोध के क्षेत्र में भारत के महत्त्वपूर्ण योगदान की अपेक्षा है। जिन परासामान्य क्षमताओं की संभावनाओं की ओर विदेशी विद्वान् संकेत कर रहे हैं, उनका महत्त्व भारतीय विद्वत् समाज की दृष्टि में अविलम्ब आना चाहिए।

1 नवभारत टाइम्स, वार्षिकांक- 1976 पृ. 25

2. परिणामत्रय संयमादतीताऽनातज्ञानम्, योगशास्त्र, 3.16

3. वही, 4.12

4. बुद्धिस्ट फिलासफी, पृ. 22

Scanned by CamScanner